ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-7* August- 2020
Innovation The Research Concept

वर्तमान में गीता की प्रासंगिकता : एक विवेचन

The Relevance of The Gita In The Present: A Discussion

Paper Submission: 15/08/2020, Date of Acceptance: 28/08/2020, Date of Publication: 29/08/2020

गीता
शोधार्थी,
संस्कृत विभाग,
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय,
रोहतक, हरियाणा, भारत

सारांश

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः।
पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत्।।[1]

जीव, जगत् और जगदीश के जागतिक अभिनय के नायक स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण ने मानव को जीवन–दर्शन प्रदान करने के लिए कुरुक्षेत्र की रणभूमि में अर्जुन को निमित्त बनाकर गीता के अलौकिक, अद्वितीय, अमर और रहस्यमय मधुर ज्ञान–संगीत का गायन किया। हजारों वर्षों के पश्चात् भी वह आज भौतिक जीवन से थके हुए, हतोत्साह और निराश हुए मानव को आशा और आश्वासन प्रदान कर उसके अन्तःस्थल में शक्ति, शौर्य, साहस और चैतन्यता जगाता है। गीता में जगत् को चिर शक्ति और उन्नति का मार्ग बताया गया है। यही एक ऐसा ग्रन्थ है जहाँ दर्शन की सुन्दरता शोभित हो रही है, धर्मशास्त्र की शोभा विकसित हो रही है, नीतिविद्या की आभा आभासित हो रही है, काव्य की कमनीयता परिस्पन्दित हो रही है और उपनिषदों की छवि छलक रही है। अतएव कहा गया है –

गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः।[2]

Sarvopanishado Gavo Dogdha Gopalanandan:
Partho Vatsah: Sudhirbhokta Milk Gitamritam Importance. [1]

Lord Sri Krishna himself, the hero of Jeev, Jagat and Jagadish's global acting, sung Arjuna in the battlefield of Kurukshetra to provide life to humans, singing the supernatural, unique, immortal and mysterious melodious music of Gita. Even today, after thousands of years, he arouses strength, gallantry, courage and enlightenment in his inner being by providing hope and assurance to a tired, discouraged and depressed human being from material life. In the Gita, the world is described as the path of everlasting power and progress. This is a book where the beauty of philosophy is being decorated, the beauty of theology is developing, the aura of ethics is being realized, the poeticity of poetry is being amplified and the image of Upanishads is being spilled. Hence it has been said -

Geeta Sugita Kartavya Kimanya: Shastravistrai. [2]

मुख्य शब्द : गीता, भारतीय–विचारधारा, धर्मग्रन्थों, निरपेक्षभाव ।
Gita, Indian Ideology, Scriptures, Absolutes.

प्रस्तावना

गीता में किसी भी धर्मग्रन्थ का खण्डन नहीं किया गया। सांख्य, योग, न्याय, वेदान्त या उपनिषद् किसी का भी विरोध नहीं किया, बल्कि सभी धर्मग्रन्थों का अर्थ निकालकर लोगों को निरपेक्षभाव और अनहंकार बुद्धि से कर्म करने का उपदेश दिया है। इसमें भी कुछ लोग कहते हैं – 'गीता कर्मवाद का समर्थन करती है।' कुछ कहते हैं वह 'ज्ञानवाद का समर्थन करती है।' दोनों ही मान्यताएं एकांगी हैं। गीता न तो कर्मवाद (प्रवृति) का पूर्णतः समर्थन करती है, न निवृत्तिवाद का पूर्ण खण्डन ही। मानवजाति के विकास में दोनों की आवश्यकता है। गीता युग–युग का जीवन ग्रन्थ है। मनुष्य जब जैसा पथ–प्रदर्शन चाहता है, गीता उसे वैसा ही मार्गदर्शन कराती है। यही कारण है कि जीवन–षास्त्र ने भारतीय–विचारधारा को सर्वाधिक प्रभावित किया है।

गीता का दर्शन आज भी दुःखदावानल से दग्ध हो रहे विश्व को शीतलता प्रदान करता है। गीता नैतिक गुणों से सम्पन्न मुक्तिमार्ग पर अग्रसर करती है। मूर्च्छितप्रायः नियमसंयमादि उदात्त गुणों को उद्घाटित कर उन्हें पुनर्जीवित कराती है।[3] असंयमी का असंयमित आहार–विहार विनाष का कारण बनता है और संयमी का आहार–विहार उसे जीवन–दान देता है। यह एक सरल

और सुबोध नैतिक सत्य है। आज के युग में संयम और विवेक की बहुत आवष्यकता है। सैकड़ों आशापाषों में निबद्ध, काम–क्रोध–परायण और अर्थ–सञ्चय की कामना को व्यग्र[4] तथा चिन्ताओं के चक्रव्यूह में चक्कर काटते मानव को निष्काम कर्मयोग का उपदेश देकर शान्ति प्रदान करती है।[5]

महाभारतकालीन परिवेष से विस्मयकारी समानता रखने वाले आज के युग की समस्त समस्याओं का समाधान गीता में सुलभ है। वस्तुतः गीता किसी देष, काल, समाज, जाति अथवा व्यक्तिविशेष के लिए नहीं, अपितु सार्वभौमिक, सार्वकालिक एवं सार्वजनिक कल्याण को ध्यान में रखकर रची गई है। अतः कल्याण की उत्कट अभिलाषा वाला मनुष्य प्रत्येक परिस्थिति में व्यवहारमात्र की कला सिखाने वाली गीता का आश्रय ले सकता है। वर्तमान विश्व की तनावपूर्ण स्थिति में गीता के उद्‌गार ही द्वन्द्व–ग्रस्त मानव के लिए निर्द्वन्द्व जीवन का पथ–प्रशस्त कर सकते हैं।

मनुष्य अनादिकाल से ही आध्यात्मिक, आधिदैविक एवं आधिभौतिक तापत्रय से संत्रस्त रहा है। इस तापत्रय का निवारण इसके कारणभूत मल, विक्षेप तथा आवरण रूप दोषत्रय की निष्पत्ति से ही सम्भव है। इसके लिए कर्मयोग, भक्तियोग तथा ज्ञानयोग रूप उपायत्रय का निरूपण गीता में किया गया है। सभी दुःखों का मूलकारण हमारे द्वारा प्रतिपादित कर्म हैं। अतः, कर्म किस तरह दुःख रहित हो सकते हैं, गीता उस कर्मयोग का प्रतिपादन करते हुए कहती है कि मनुष्य को कर्म करने का अधिकार है, परन्तु वे कर्म पवित्र, सात्विक तथा शास्त्रविहित श्रेष्ठ कर्म ही होने चाहिएं। फल पर किसी का अधिकार नहीं है। फल की कामना से कर्म करने वाले संकीर्ण स्वार्थों में बंधे रहते हैं। मनुष्य इन सकाम कर्मों से प्राप्त होने वाली पीड़ा से छटपटाता रहता है। इस पीड़ा से बचने के लिए कर्मफल के प्रति आसक्ति का त्याग ही एकमात्र उपाय है।[6]

फल–कामना के अभाव में कर्म कैसे सम्भव है? इस प्रकार के प्रश्नों की सम्भावना के कारण ही कर्मफल की कामना के त्याग के विषय में भगवान् श्रीकृष्ण मनुष्य को सचेत करते हैं कि तुम अकर्मण्य होकर मत बैठ जाना। यह अपने और समाज के प्रति अपराध है। उपर्युक्त शंका का अत्यधिक विवेकपूर्ण समाधान करते हुए श्रीकृष्ण कहते हैं कि–किसी कार्य को सम्पादित करने में 'कर्तृत्व' तो अनन्त समष्टियों का है, केवल तुम्हारा नहीं। इस प्रकार अकेले तुम्हारा 'कर्तृत्व–अभिमान' मिथ्या तथा फल की कामना अनुचित है। इन अनन्त साधनों में से एक की भी सन्नद्धता का आभाव कर्म को सम्पन्न नहीं होने देता। अतः पूरे मनोयोग से कर्म तो करना चाहिए, परन्तु कर्तृत्व का अभिमान नहीं करना चाहिए।[7] इस निष्काम–कर्म में पूर्णता लाने के लिए गीता में तीन साधन निर्दिष्ट हैं– 1. योगस्थः कुरु कर्माणि, 2. सङ्गं त्यक्त्वा, 3. सिद्धय–सिद्धयोः समो भूत्वा।[8]

योग में स्थित होकर, आसक्ति को छोड़कर, सफलता तथा असफलता में समान रहकर ही कर्म करने का विधान है। सिद्धि और असिद्धि में समान रहकर कार्य करने वाला जय–पराजय, सुख–दुःख, लाभ–हानि से विचलित नहीं होता। गीता सावधान करती है कि कर्म का आरम्भ न करने से कोई निष्काम नहीं बन जाता और न ही कर्मों को त्याग करके कोई सिद्धि प्राप्त कर सकता है।[9] अतः गीता का सन्देश है–

न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्।[10]
नियतं कुरु कर्म त्वम्।[11]

आज मनुष्य का जीवन, जीवन ही नहीं मालूम पड़ता है; क्योंकि जहां शान्ति न हो, सौहार्द न हो, समर्पण न हो, आनन्द न हो, वहाँ भला जीवन भी क्या होगा। लेकिन गीता के निष्काम कर्म के उपदेश को अपने जीवन में अपनाकर मानव भगवान् के स्वरूपभूत आनन्द का अनुभव करने लगता है तथा भक्तिरस के प्रवाह में अनात्मभाव, वैमनस्य एवं स्वार्थान्धता आदि वृत्तियाँ तथा विषयवासनाएँ सदा के लिए विलीन हो जाती हैं। 'मामेकं शरणं व्रज' का सिद्धान्त सिद्ध होकर शुभगुण प्रकट होने लगते हैं। भक्ति के स्वरूप का निरूपण करते हुए भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं– भक्त मुझ में चित्त लगाकर, मुझ में प्राणों को अर्पण करते हुए परस्पर मेरा बोध कराते हुए सर्वथा सन्तुष्ट रहकर मुझ में रमण करते हैं।[12]

आज सम्पूर्ण विश्व की चिन्तन प्रक्रिया ही चिन्त्य हो गई है। आज का मानव आग्नेय विचारों से ऊर्जा ग्रहण कर रहा है। इसी का परिणाम है कि सम्पूर्ण विश्व आतंकवाद से ग्रस्त और सन्त्रस्त है। लोगों का पारस्परिक सद्‌भाव एवं सौहार्द इत्यादि की ओर तो जनता को लगाती ही है, इसके अतिरिक्त वह मानव को ब्रह्मनिष्ठ बना देती है। आवरण–दोष रूप अज्ञान–तिमिर को ज्ञानयोग से नष्ट करके जीवनपथ को आलोकित कर देती है। यह ज्ञान ही आत्मसाक्षात्कार का कारण बनता है। इस आत्मा को जानना ही मानव–जीवन का परम लक्ष्य है।[13] यह तभी संभव है जब मानव मन से अज्ञान–अन्धकार समाप्त हो और सब प्राणियों में आत्मा को तथा आत्मा में वह अपने अन्दर विद्यमान ब्रह्म के साथ एक हो जाता है तब जीवन की समूची धारा के साथ एक हो जाता है।[14] इस प्रकार गीता आत्मसाक्षात्कार करा कर समस्त मानवता को संकल्प और शान्ति देकर आशान्वित कर सकती है। आज व्यक्ति समाज और परिवेश में समायोजित नहीं हो पाता और वह असन्तुलित होकर स्वयं अपने को भारस्वरूप मानकर आत्महत्या तक कर लेता है। गीता निष्काम कर्म के उपदेश से मनुष्य की अन्तःप्रेरणा को सञ्चालित करती है। वह उसे निष्काम कर्म की ओर प्रवृत्त कर कर्त्तव्याभिमुख जीवन को सार्थक बनाती है।

गीता धर्मनिरपेक्ष, भेदभावमुक्त, शान्ति और समृद्धि का आदि स्रोत है। भारतीय मनीषियों ने ही नहीं, अपितु विदेषी दार्षनिकों, चिन्तकों, सन्तों तथा वैज्ञानिकों ने भी गीता को मानवबुद्धि की उच्चतम उपलब्धि या अन्यतम राष्ट्रीय ग्रन्थ माना है। आज समस्त मानवजाति विशाद के विचित्र आन्तरिक दबाव, अनिश्चित विकल्पों के साथ–साथ जड़ आघात झेल रही है। इस सन्दर्भ में आज भी गीता की प्रासंगिकता, मूल्यवत्ता और अर्थसंगति ही समस्त मनुष्य को विशाद मुक्त कर सकती है। गीता वस्तुतः समस्त मानवता का संगीत है। जीवन के हर मोड़ पर अलौकिक सृष्टि और सम्यक् दृष्टि देने वाला दिव्य ग्रन्थ

है। विष्व के वर्तमान संकट, वैचारिक व्यामोह और हमारी भ्रान्तियों में गीता का उपदेष अमोघ औषधि है।

गीता का प्रत्येक चिन्तन एक–एक दर्शन या दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करता है। एक ही परमात्मा को जानने या समझने के अनेक मार्ग या योग हैं। गीता ज्ञान, कर्म और भक्ति की त्रिवेणी है। गीता में तीनों योगों का समन्वय है। इसकी सरल, सजीव एवं सुस्पष्ट समन्वयात्मक शैली ने इसे न केवल हिन्दुओं, प्रत्युत समग्र मानव–समुदाय का लोकप्रिय ग्रन्थ बना दिया है। गीता समन्वयात्मक ज्ञान की पवित्र गंगा है जिसमें उपदेषरूपी ऊर्मियाँ हैं– उदारभाव से धर्मपालन, निष्कामभाव से कर्म, समस्त सृष्टि से सदाचार, जगत् को आत्मवत् समझना, प्रभु में अनन्य शरणगति, समदृष्टि और आत्मबुद्धि से सर्वहित साधन।

अध्ययन का उददेश्य

वर्तमान समय में श्रीमद्भागवत गीता को बहुत उपयोगिता है आधुनिक समाज में गीता अध्ययन करके वर्तमान समय में समाज में फैली अनेक प्रकार की सामाजिक बुराइयों से बच सकता है और अपने जीवन को सफल बना सकते हैं।

निष्कर्ष

अतः विषाद के क्षणों में आज भी मानव मार्गदर्शन के लिए गीता की शरण ले सकता है क्योंकि वह भगवान् का हृदय है– 'गीता में हृदयं पार्थ' जहाँ सबको शरण मिल सकती है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *श्रीगीतामहात्म्यम् 2/5*
2. *महाभारत–भीष्मपर्व, 43/1*
3. *युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु।*
   युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा।। गीता, 6/17
4. *आषापाषतैर्बद्धाः कामक्रोधपरायणाः।*
   ईहन्ते कामभागार्थमन्यायेनार्थसञ्चयान्।। गीता, 16/12
5. *गीता, 16/13*
6. *तदेव, 2/47*
7. *तदेव, 18/14–16*
8. *तदेव, 2/48*
9. *तदेव, 3/4*
10. *तदेव, 3/5*
11. *तदेव, 3/8*
12. *तदेव, 10/9*
13. *तदेव, 6/29*
14. *तदेव, 12/34*